...उसके जैसा कुछ!

पीटर एच. रेनोल्ड्स

रमॉन को चित्र बनाना
बहुत अच्छा लगता था।

कभी भी

कुछ भी

कहीं भी

एक दिन रमॉन एक
फूलदान बना रहा था।

उसके भाई, लियॉन, ने उसके कंधे के पीछे से झांका।

लियॉन खूब ज़ोर से हंसने लगा।

“**यह** क्या है?” उसने पूछा।

रमॉन जवाब न दे सका।

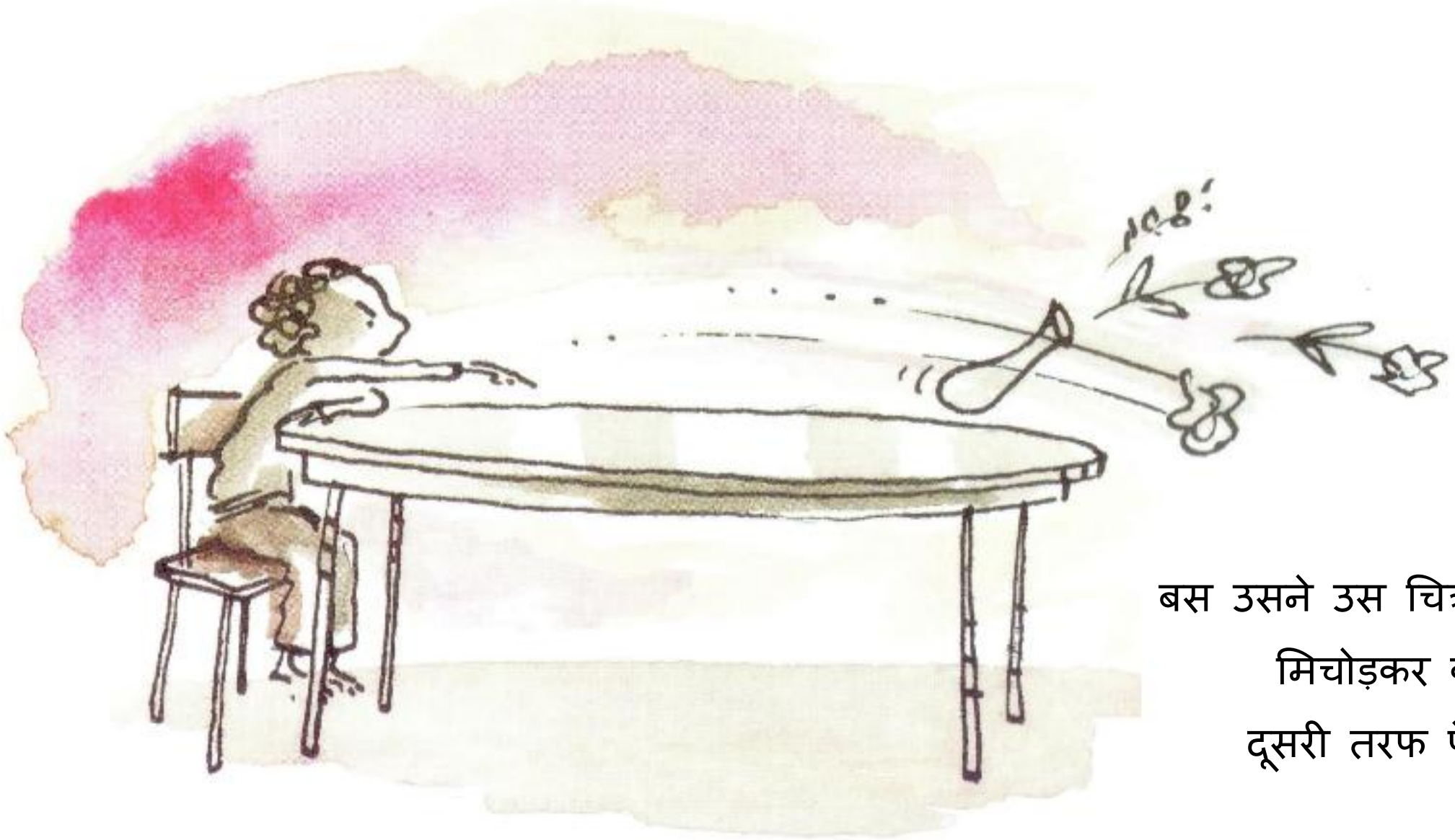

बस उसने उस चित्र वाले पन्ने को
मिचोड़कर कमरे की
दूसरी तरफ फेंक दिया।

लियॉन की हंसी देर तक
रमॉन के कानों में गूँजती रही।

वो कोशिश करता रहा कि उसके चित्र
“सही” बनें, पर वो बनते ही नहीं थे।

कई महीनों की कोशिश और
कई सारे पन्ने मोड़-तोड़कर
फेंकने के बाद, रमॉन ने
पैंसिल नीचे रख दी,
“बस, हो गया। अब और नहीं!”

उसकी बहन मारीसॉल,
उसे देख रही थी।
“क्या चाहिए तुम्हें?”
रमॉन ने कड़क स्वर में पूछा।

“मैं तुम्हें चित्र बनाते हुए देख रही थी,” उसने कहा।
रमॉन ने कुछ तीखे अंदाज़ में कहा,
“मैं चित्र नहीं बना रहा! जाओ यहाँ से।“

मारीसॉल वहाँ से भाग गई।
लेकिन जाते-जाते उसने
रमॉन का फेंका हुआ एक
चित्र उठा लिया।

“इधर आओ, वापिस दो मुझे वो!“
रमॉन उसके पीछे भागता हुआ
उसके कमरे में पहुँच गया।

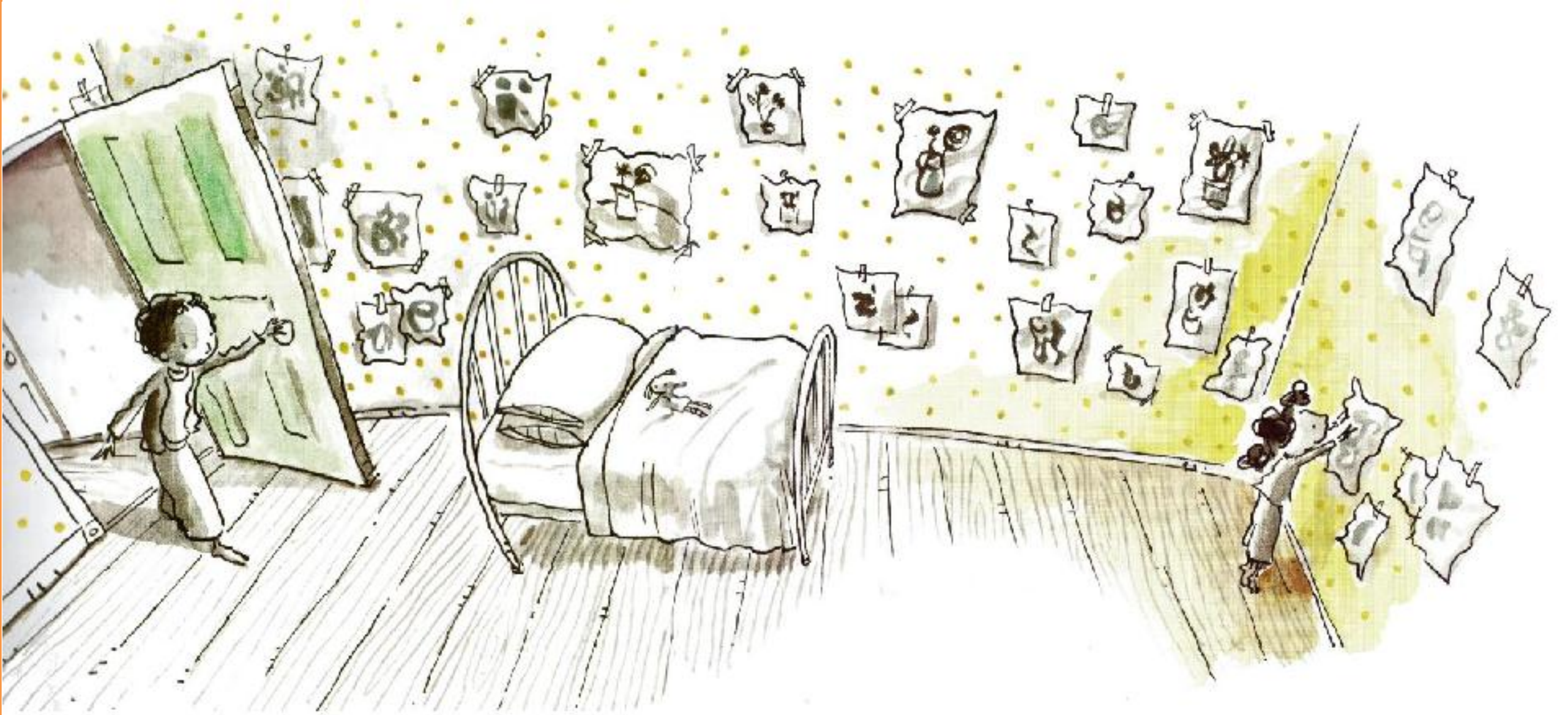

वह उस पर चिल्लाने ही वाला था, कि उसकी नज़र
कमरे की दीवारों पर पड़ी। वह कुछ भी न कह सका...।

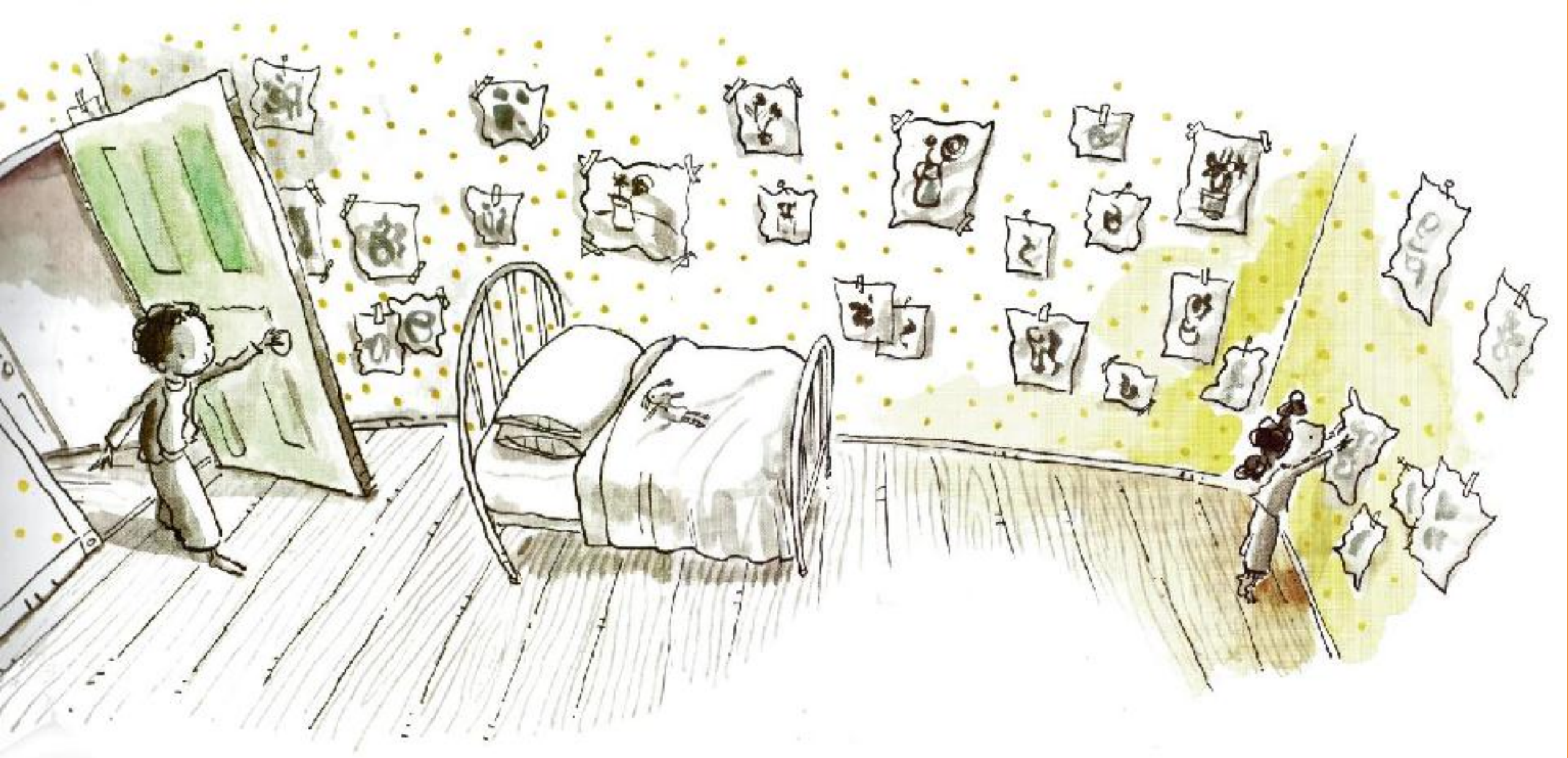

बस, अपने फेंके हुए चित्रों से सजी उन दीवारों को घूरता रहा।

“मेरे पसंदीदा चित्रों में से यह एक है,” मारीसॉल ने चित्र की ओर इशारा किया।

“यह फूलदान बनाने की
एक कोशिश थी, लेकिन वैसा
बिल्कुल भी नहीं लग रहा
है,” रमॉन ने कहा।
“हाँ..., पर *‘फूलदान-जैसा’*
तो कुछ लग रहा है!”
मारीसॉल ने उत्साह से कहा।

“फूलदान-जैसा?” रमॉन ने
चित्र को ध्यान से देखा।
फिर उसने दीवार पर लगे
सभी चित्रों को देखा। अब वह
उन्हें नई नज़र से देख रहा था।

“हाँ..., सच में, *‘जैसा’*
तो लग रहा है।“

रमॉन को कुछ हल्का लगने लगा
और उसमें नई स्फूर्ति आ गई।
'फूलदान-जैसा' सोचने से, उसके मन में
कई विचार अब सहजता से आने लगे।

वह उन्हें बनाता गया। जो भी
उसका मन करता वह बनाता जाता –
बहुत सी अधूरी, बेतरतीब रेखाएँ।
बिना चिंता के, तेजी से उमड़ती।

एक बार फिर से रमॉन
अपने आस-पास की दुनिया
को कागज़ पर उतारने
लगा। उसने चित्र बनाए।
और चित्र बनाए।

किसी *'जैसा'* चित्र बनाकर उसे बहुत ही अच्छा महसूस होता।

उसने अपनी कई किताबें, डायरियां भर दीं।

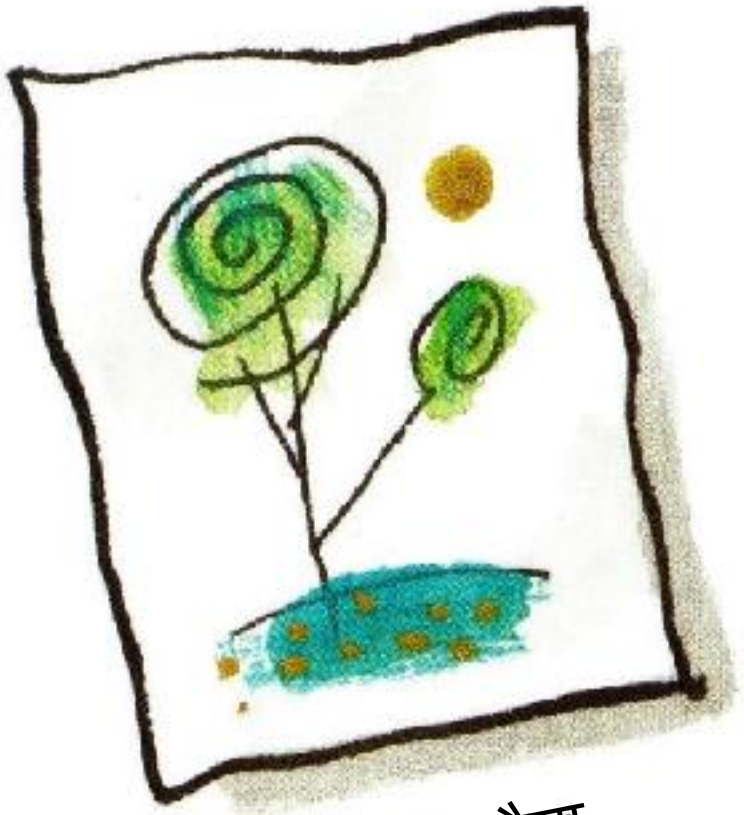

पेड़-जैसा

घर-जैसा

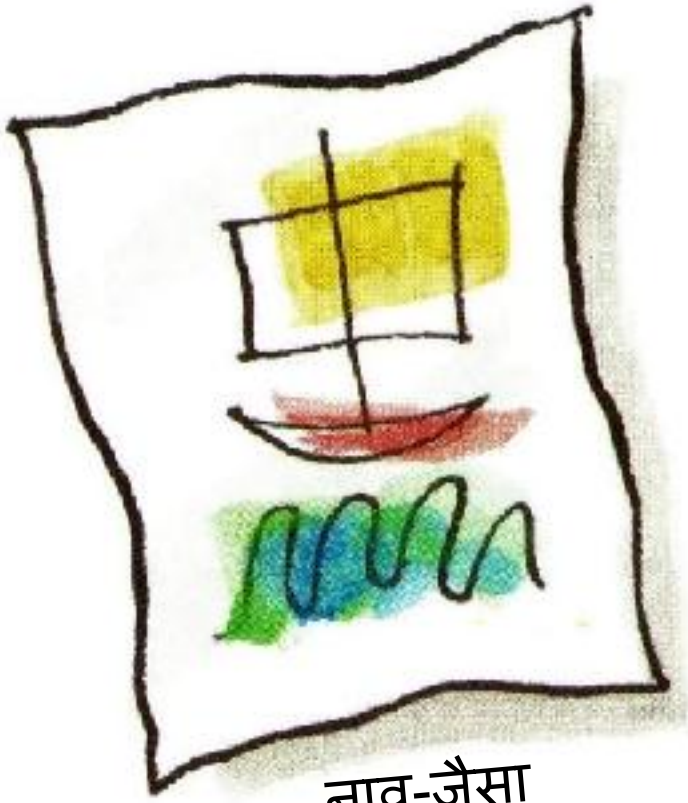

नाव-जैसा

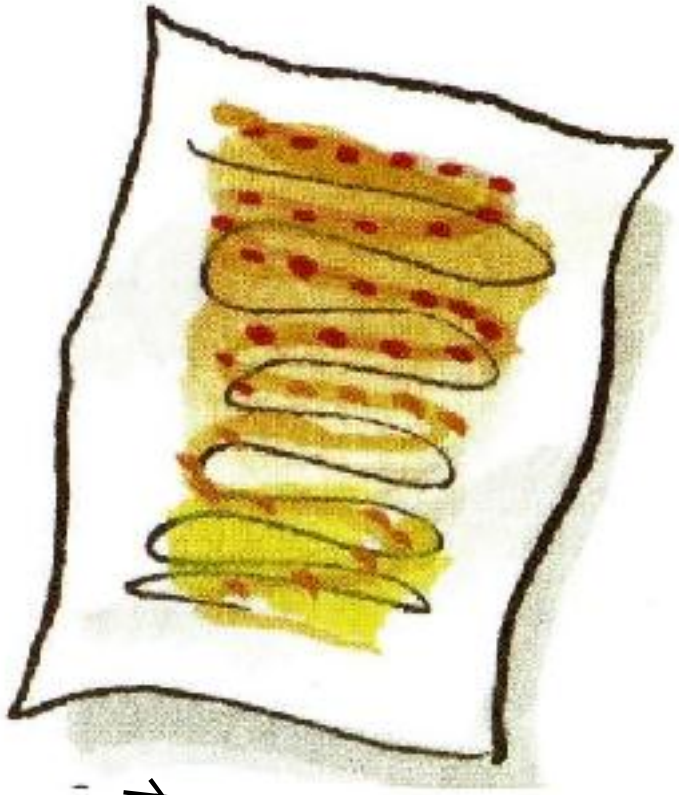

दोपहर-जैसा

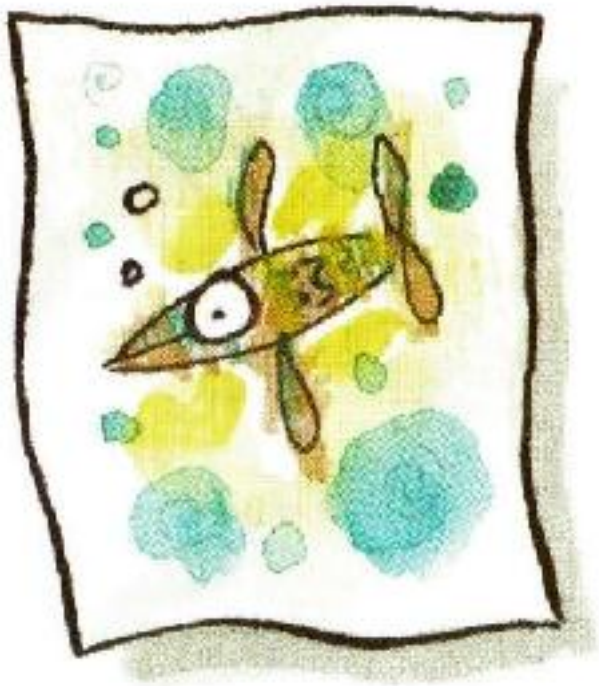

मछली-जैसा

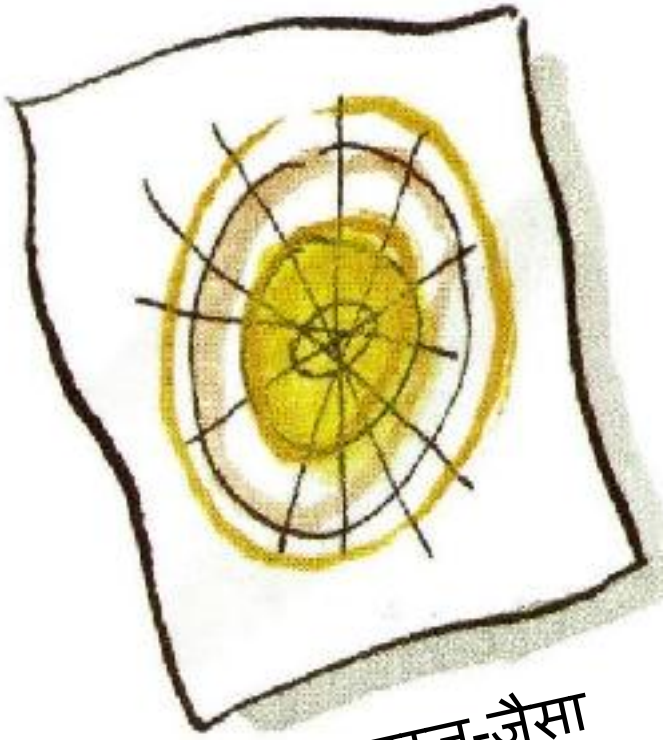

सूरज-जैसा

शांति-जैसा कुछ

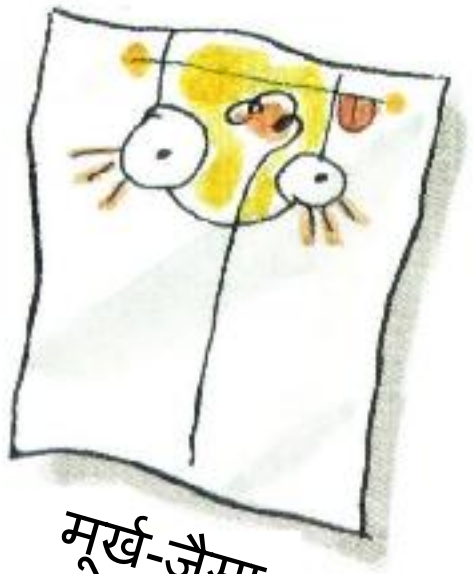

मूर्ख-जैसा

रमॉन को एहसास हुआ कि वह *'जैसी'* वाली *भावनाएँ* भी बना सकता था।

उत्साह-जैसा कुछ

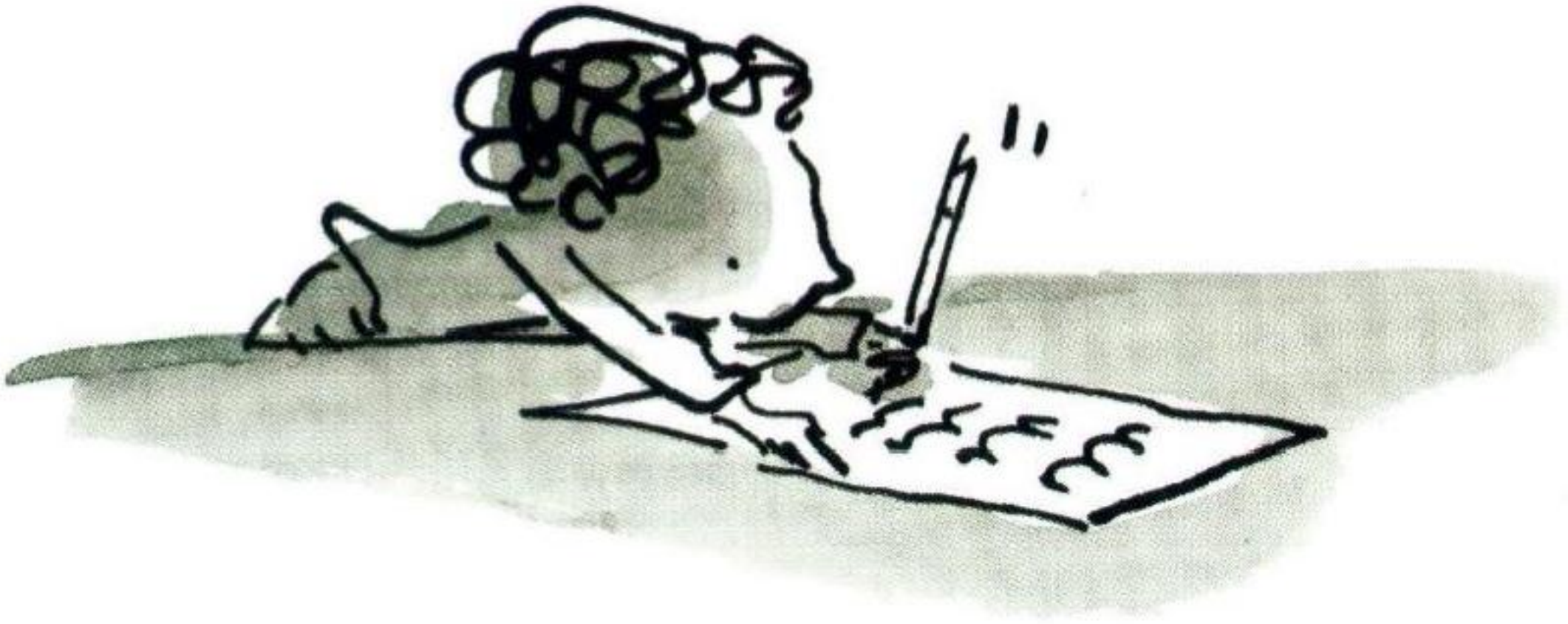

इस तरह के चित्रों से, इसी तरह का लेखन भी शुरू हुआ।

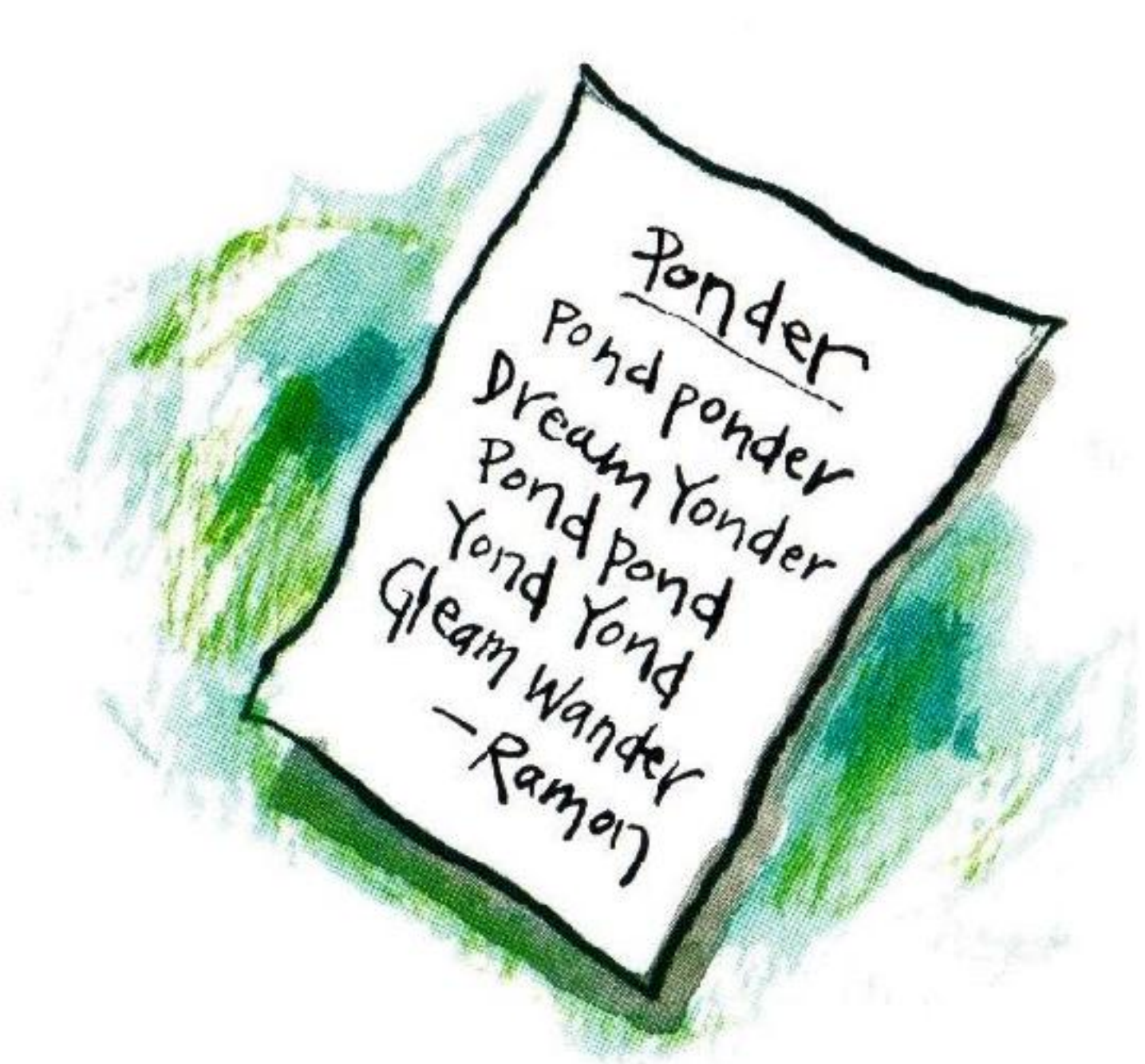

जो वो लिख रहा था,
वे कविताएँ थीं या नहीं,
यह तो उसे पता न था,
लेकिन *कविता-जैसा*
कुछ तो था।

बसंत की एक सुबह, रमॉन को
एक बहुत खूबसूरत एहसास हुआ।
वो ऐसा एहसास था जो उस-जैसे
चित्र और उसके लिए लिखी
कविता में भी बयान नहीं किया
जा सकता था।

उसने तय किया कि वह
इसका चित्र नहीं बनाएगा।
बल्कि उसका आनंद लेगा,
उसका लुत्फ उठाएगा।

और रमॉन हमेशा-हमेशा के लिए 'खुश-जैसा' रहने लगा।

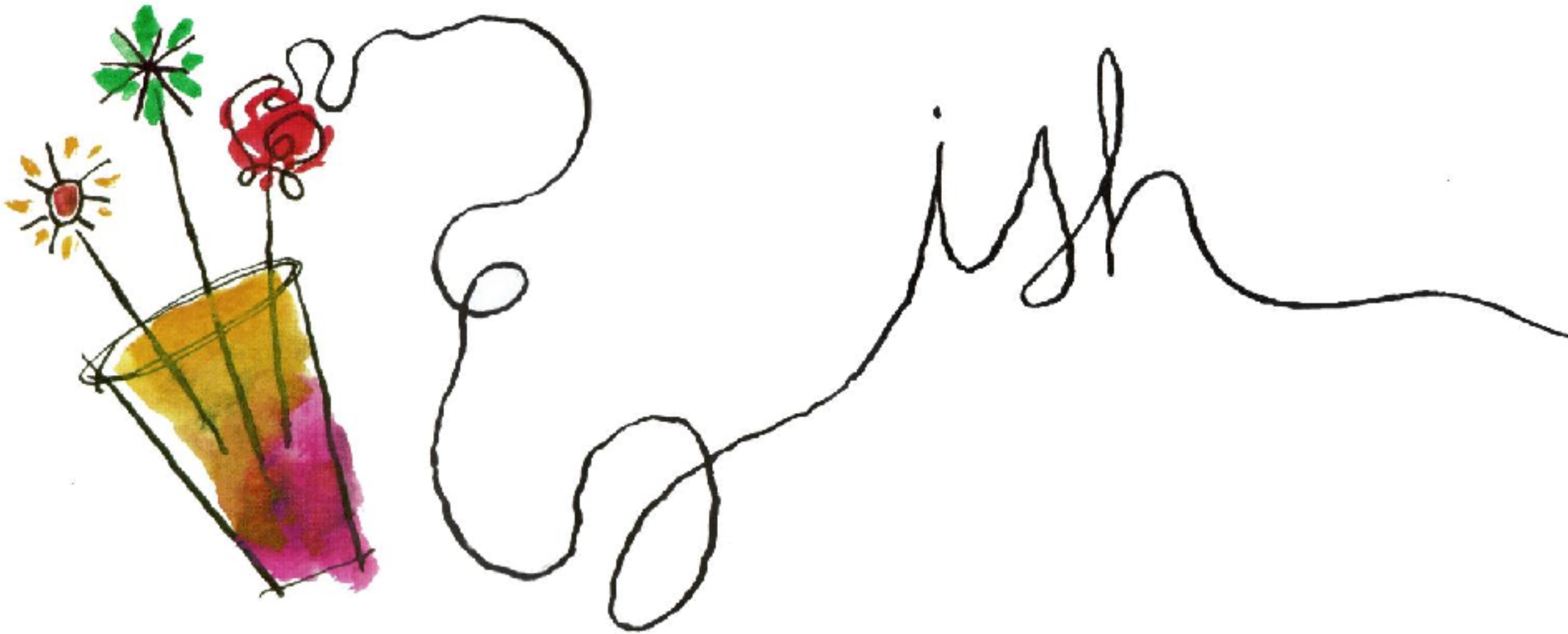

अंत